आरज़ूए दीदारे मदीना

AARZOOE DIDARE MADINA (HINDI)

★ या खुदा तुझ से मेरी दुआ है 1
★ अल्लाह अता हो मुझे दीदारे मदीना 13
★ मेरा खुदा ए-मकान में आ गया था 7
★ मैं दर पे हैं मंगतों का गुज़ारा न होगे सरकार 15

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी र-ज़वी

या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ है

عَزَّوَجَلَّ

(येह कलाम 8 शव्वालुल मुकर्रम 1431 हि. को कम्पोज़ किया गया)

सर है ख़म हाथ मेरा उठा है या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ है
फ़ज़्ल की रह़्म की इल्तिजा है या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ है
क़ल्ब में याद लब पर सना है मेरे हर दर्द की येह दवा है
कौन दुखियों के तेरे सिवा है या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ है
क़ल्ब सख़्ती में ह़द से बढ़ा है बन्दा त़ालिब तेरे ख़ौफ़ का है
इल्तिजाए ग़मे मुस्त़फ़ा है या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ है
हुब्बे दुन्या में दिल फंस गया है नफ़्से बदकार ह़ावी हुवा है
हाए शैत़ां भी पीछे पड़ा है या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ है
आह ! बन्दा दुखों में घिरा है इस को तेरा ही बस आसरा है
इल्तिजाए करम या ख़ुदा है या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ है
तेरा इन्आ़म है या इलाही कैसा इक्राम है या इलाही
हाथ में दामने मुस्त़फ़ा है या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ है
इ़श्क़ दे सोज़ दे चश्मे नम दे मुझ को मीठे मदीने का ग़म दे

वासित़ा गुम्बदे सब्ज़ का है या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ़ है
हर गुनह से बचा मुझ को मौला नेक ख़स्लत बना मुझ को मौला
तुझ को र-मज़ान का वासित़ा है या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ़ है
फ़ज़्ल कर रह़म कर तू अ़त़ा कर और मुआ़फ़ ऐ ख़ुदा हर ख़त़ा कर
वासित़ा पन्जतन पाक का है या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ़ है
अ़फ़्वो रह़मत का बख़्शिश का साइल हूं निहायत गुनहगारो ग़ाफ़िल
मेरा सब ह़ाल तुझ पर खुला है या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ़ है
हूं ब ज़ाहिर बड़ा नेक सूरत कर भी दे मुझ को अब नेक सीरत
ज़ाहिर अच्छा है बात़िन बुरा है या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ़ है
बे सबब ऐ ख़ुदा कर दे बख़्शिश ह़श्र में मुझ से करना न पुरसिश
नाम ग़फ़्फ़ार मौला तेरा है या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ़ है
मुझ ख़त़ाकार पर भी अ़त़ा कर बे ह़िसाब बख़्श दे रब्बे अक्बर
मुझ को दोज़ख़ से डर लग रहा है या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ़ है
नज़्अ़ में रब्बे ग़फ़्फ़ार तुझ से मौत से क़ब्ल बीमार तुझ से
त़ालिबे जल्वए मुस्त़फ़ा है या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ़ है

क़ब्र में मुझ को तन्हा लिटा कर चल दिये हाए सारे बरादर
दिल अंधेरे में घबरा रहा है या खुदा तुझ से मेरी दुआ है

मग़्फ़िरत का हूं तुझ से सुवाली फैरना अपने दर से न ख़ाली
मुझ गुनहगार की इल्तिजा है या खुदा तुझ से मेरी दुआ है

मेरे मुर्शिद जो ग़ौसुल वरा हैं शाह अह़मद रज़ा रहनुमा हैं
येह तेरा लुत़्फ़ तेरी अ़त़ा है या खुदा तुझ से मेरी दुआ है

नारे दोज़ख़ से मुझ को अमां दे बहरे ह़-सनैन बाग़े जिनां दे
कर दे रह़मत मेरी इल्तिजा है या खुदा तुझ से मेरी दुआ है

वासित़ा तुझ को प्यारे नबी का और अस्ह़ाबो आले नबी का
बख़्श दे मुझ को येह इल्तिजा है या खुदा तुझ से मेरी दुआ है

या खुदा माहे र-मज़ां के सदक़े सच्ची तौबा की तौफ़ीक़ दे दे
नेक बन जाऊं जी चाहता है या खुदा तुझ से मेरी दुआ है

दर्दे इ़स्यां मिटा या इलाही दे दे कामिल शिफ़ा या इलाही
तुझ से बीमार की इल्तिजा है या खुदा तुझ से मेरी दुआ है

जो हैं बीमार सिह़्ह़त के त़ालिब उन पे फ़रमा करम रब्बे ग़ालिब

तुझ से रह़मो करम की दुआ़ है या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ़ है

मैं ने माना कि सब से बुरा हूं किस का हूं ? तेरा हूं मैं तेरा हूं

नाज़ रह़मत पे मुझ को बड़ा है या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ़ है

ऐ ब दुन्या में तूने छुपाए ह़श्र में भी न अब आंच आए

आह ! नामा मेरा खुल रहा है या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ़ है

उ़म्र बदियों में सारी गुज़ारी हाए ! फिर भी नहीं शर्मसारी

बख़्श महबूब का वासित़ा है या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ़ है

विर्दे लब कलिमए त़य्यिबा हो और ईमान पर ख़ातिमा हो

आ गया हाए ! वक़्ते क़ज़ा है या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ़ है

या ख़ुदा ऐसे अस्बाब पाऊं काश मक्के मदीने में जाऊं

मुझ को अरमान ह़ज का बड़ा है या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ़ है

आह ! रन्जो अलम ने है मारा या इलाही मुझे दे सहारा

एक ग़मगीन दिल की सदा है या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ़ है

मेरी जान आफ़तों से छुड़ाना मूज़ी अमराज़ से भी बचाना

तुझ को सिद्दीक़ का वासिता है या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ है
तू अ़ता हिल्म की भीक कर दे मेरे अख़्लाक़ भी ठीक कर दे
तुझ को फ़ारूक़ का वासिता है या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ है
गो येह बन्दा निकम्मा है बेकार इस से ले फ़ज़्ल से रब्बे ग़फ़्फ़ार
काम वोह जिस में तेरी रिज़ा है या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ है
तेरे प्यारे की दुखियारी उम्मत पर है सैलाब[1] की आई आफ़त
रहूम कर बस तेरा आसरा है या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ है
हर त़रफ़ से बलाओं ने घेरा आफ़तों ने लगाया है डेरा
तू ही अब मेरा ह़ाजत रवा है या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ है
उस की झोली मुरादों से भर दे उस के ह़क़ में जो बेहतर हो कर दे
जिस ने मुझ से दुआ का कहा है या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ है
इ़श्क़े अह़मद में आंसू बहाऊं हुब्बे दुन्या से ख़ुद को बचाऊं
ऐसी तौफ़ीक़ दे इल्तिजा है या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ है
मेरी दुश्मन से फ़रमा हिफ़ाज़त दीनो ईमां भी रखना सलामत

مدینہ

1: यहां "सैलाब" की जगह ह़स्बे ह़ाल "महंगाई" भी पढ़ सकते हैं।

दस्त बस्ता मेरी इल्तिजा है या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ़ है

मेहरबां तू ही, तू ही मददगार उस दुखी दिल का तू ह़ामिये कार

जिस को दुन्या ने ठुकरा दिया है या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ़ है

सख़्त गोई की मिट जाए ख़स्लत नर्म गोई की पड़ जाए आ़दत

वासित़ा ख़ुल्क़े मह़बूब का है या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ़ है

सुन्नतों की करूं ख़ूब ख़िदमत हर किसी को दूं नेकी की दा'वत

नेक मैं भी बनूं इल्तिजा है या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ़ है

क़ाफ़िलों में सफ़र की हो कसरत हम से यूं दीन की ले ले ख़िदमत

आ़जिज़ाना इलाही दुआ़ है या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ़ है

मेरी बकबक की आ़दत मिटा दे और आंखें ह़या से झुका दे

सदक़ा उ़स्मां का जो बा ह़या है या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ़ है

या इलाही कर ऐसी इ़नायत

दे दे ईमान पर इस्तिक़ामत

तुझ से अ़त़्त़ार की इल्तिजा है

या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ़ है

मज़ा ख़ूब र-मज़ान में आ रहा था

(येह कलाम 5 शव्वालुल मुकर्रम 1431 हि. को कम्पोज़ किया गया)

मसर्रत से सीना मदीना बना था

मज़ा ख़ूब र-मज़ान में आ रहा था

परे रन्जो ग़म का अंधेरा हुवा था

मज़ा ख़ूब र-मज़ान में आ रहा था

ख़बर जब कि र-मज़ां की आमद की आई

तो मुरझाए दिल की कली मुस्कराई

क्या अब्रे करम नूर बरसा रहा था

मज़ा ख़ूब र-मज़ान में आ रहा था

नज़र चांद र-मज़ां का जिस वक़्त आया

हुवा रह़मतों का ज़माने पे साया

उफ़ुक़ पर भी अब्रे करम छा गया था

मज़ा ख़ूब र-मज़ान में आ रहा था

खुले बाबे जन्नत, जहन्नम को ताले
पड़े, हर त़रफ़ थे उजाले उजाले
वोह मरदूद शैत़ान क़ैदी बना था
मज़ा ख़ूब र-मज़ान में आ रहा था

तराने ख़ुशी के फ़ज़ा गुनगुनाती
हवा भी मसर्रत के नग़्मे सुनाती
जिधर देखिये मरह़बा मरह़बा था
मज़ा ख़ूब र-मज़ान में आ रहा था

फ़ज़ाएं भी क्या नूर बरसा रही थीं
हवाएं मसर्रत से इठला रही थीं
समां हर त़रफ़ कैफ़ो मस्ती भरा था
मज़ा ख़ूब र-मज़ान में आ रहा था

शबो रोज़ रह़मत की बरसात होती
अ़त़ाओं की झोली में ख़ैरात होती
मुसल्मां का दामन करम से भरा था
मज़ा ख़ूब र-मज़ान में आ रहा था

जो उल्फ़त के पैमाने तक़्सीम होते
तो बख़्शिश के परवाने तरक़ीम[1] होते
ख़ुशा ! बहूरे रह़मत को जोश आ गया था
मज़ा ख़ूब र-मज़ान में आ रहा था

मसाजिद में हर सू बहार आ गई थी
ख़ुदा के करम की घटा छा गई थी
जिसे देखो सज्दे में आ कर गिरा था
मज़ा ख़ूब र-मज़ान में आ रहा था

फ़ज़ाएं मुनव्वर हवाएं मुअ़त्त़र
ख़ुदा की क़सम था समां कैफ़ आवर
दिलों पर भी इक वज्द सा छा गया था
मज़ा ख़ूब र-मज़ान में आ रहा था

कलेजे में ठन्डक थी, चेहरे पे पानी
दिलों में भी थी किस क़दर शादमानी
सुकूं माहे र-मज़ां में कैसा मिला था
मज़ा ख़ूब र-मज़ान में आ रहा था

1 : लिखे जाते, तह़रीर

मुसल्मां थे ख़ुश रुख़ पे रौनक़ बड़ी थी
ख़ुदा के करम की बरसती झड़ी थी
इबादत में दिल किस क़दर लग गया था
मज़ा ख़ूब र-मज़ान में आ रहा था

सारे शाम इफ़्तार की रौनक़ें थीं
ब वक़्ते सह़र किस क़दर ब-र-कतें थीं
सुरूर आ रहा था मज़ा आ रहा था
मज़ा ख़ूब र-मज़ान में आ रहा था

मुक़द्दर ने की या-वरी साथ जिन के
मसाजिद में वोह **मो'तकिफ़** हो गए थे
इबादत का क्या ख़ूब जज़्बा मिला था
मज़ा ख़ूब र-मज़ान में आ रहा था

इबादत में उ़श्शाक़ लज़्ज़त थे पाते
अदब से तिलावत में सर को झुकाते
नमाज़ों का रोज़ों का भी इक मज़ा था
मज़ा ख़ूब र-मज़ान में आ रहा था

मुनाजाते इफ़्तार में रिक़्क़तें थीं
दुआओं में भी किस क़दर लज़्ज़तें थीं
जिसे देखो वोह महवे यादे खुदा था
मज़ा ख़ूब र-मज़ान में आ रहा था

सना ख़्वान जिस वक़्त ना'तें सुनाते
तो उ़श्शाक़ सुन कर के आंसू बहाते
नशा ख़ूब इश्क़े नबी का चढ़ा था
मज़ा ख़ूब र-मज़ान में आ रहा था

मुबल्लिग़ अ़ज़ाबों से जिस दम डराता
कोई कप-कपाता कोई थर-थराता
कोई गिड़-गिड़ाता कोई चीख़ता था
मज़ा ख़ूब र-मज़ान में आ रहा था

घड़ी जब कि र-मज़ां की रुख़्सत की आई
तड़पते थे सदमे से इस्लामी भाई
बिलक्ता था कोई, कोई ग़मज़दा था
मज़ा ख़ूब र-मज़ान में आ रहा था

दमे रुख़्सते माहे र-मज़ां मुसल्मां

थे ग़मगीनो हैरां, परेशां परेशां

शबे ई'द देखो जिसे रो रहा था

मज़ा ख़ूब र-मज़ान में आ रहा था

मुझे माहे र-मज़ां का ग़म दे इलाही

मिटा हुब्बे दुन्या की दिल से सियाही

मज़ा फ़ानी सन्सार में क्या रखा था

मज़ा ख़ूब र-मज़ान में आ रहा था

जो थे **मो'तकिफ़** "म-दनी मर्कज़" के अन्दर

बिचारे थे अ़त्तार ह़द द-रजे मुज़्त़र

दमे अल वदाअ़ उन का दिल जल रहा था

मज़ा ख़ूब र-मज़ान में आ रहा था

अल्लाह अ़ता हो मुझे दीदारे मदीना

(12 शव्वालुल मुकर्रम 1431 हि. को येह कलाम क़लम बन्द किया गया)

अल्लाह अ़ता हो मुझे दीदारे मदीना
हो जाऊं मैं फिर ह़ाज़िरे दरबारे मदीना

आंखें मेरी मह़रूम हैं मुद्दत से इलाही
अ़र्सा हुवा देखा नहीं गुलज़ारे मदीना

फिर देख लूं सह़राए मदीना की बहारें
फिर पेशे नज़र काश ! हों कोह्सारे मदीना

फिर गुम्बदे ख़ज़रा के नज़ारे हों मुयस्सर
अल्लाह दिखा दे मुझे मीनारे मदीना

ख़ाक आंखों में मह़बूब के कूचे की सजा[1] कर
देने को सलामी चलूं दरबारे मदीना

क्या कैफ़ो सुरूर आता था अफ़्सोस वोह मेरे
ख़्वाब बन गए गोया सभी अस्फ़ारे मदीना[2]

ता'ज़ीम को उठ जाते सभी क़ाफ़िले वाले
जूं ही नज़र आते उन्हें आसारे[3] मदीना

مدينه

1: اَلۡحَمۡدُلِلّٰه बारहा आंखों में ख़ाके मदीना लगा कर सलाम के लिये ह़ाज़िर होने की सआ़दत पाई है, इस के लिये सुरमे की सलाई अक्सर जेब में रहती थी येह सआ़दत फिर पाने की आरज़ू है।

2: मु-तअ़द्दद बार पै दर पै सफ़रे मदीना नसीब हुवा मगर ता दमे तह़रीर 8 साल से मह़रूमी है। इस शे'र में उसी की त़रफ़ इशारा है।

3: मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّ تَعظِيمًا से मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّ تَعظِيمًا जाते हुए जब दूर से मदीनए पाक के आसार नज़र आते तो हमारा "क़ाफ़िलए चल मदीना" बस के अन्दर खड़ा हो जाता और रो रो कर दुरूदो

पढ़ पढ़ के सुनाया है इन्हें कलिमए तौहीद[1]
ईमां पे गवाह हैं मेरे अश्जारे मदीना

शादाबिये जन्नत का मैं मुन्किर नहीं लेकिन
है हुस्न में बे मिस्ल चमन ज़ारे मदीना

अफ़्सोस ! मेरे नफ़्स को फूलों की त़लब है
आ दिल में रहे आंख से ऐ ख़ारे मदीना

कसरत से दुरूद उन पे पढ़ो रब ने जो चाहा
सीने में उतर आएंगे अन्वारे मदीना

सरकार बुलाते हैं मदीने में करम से
उस को कि जो हो दिल से त़लब गारे मदीना

रिह़लत की घड़ी है मेरे अल्लाह दिखा दे
सिर्फ़ एक झलक जल्वए सरकारे मदीना

अल्लाह मुझे बख़्श, न हो ह़श्र में पुरसिश
कर लुत़्फ़ो करम अज़ पए सरकारे मदीना

या रब दिले अ़त्त़ार पे छाई है उदासी
कर शाद दिखा कर इसे गुलज़ारे मदीना

مدینہ

1: اَلْحَمْدُلِلّٰہ बारहा मदीनए मुनव्वरह के दरख़्तों को कलिमा शरीफ़ सुना कर अपने ईमान पर गवाह करने का शरफ़ ह़ासिल किया है। सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ

तेरे दर से है मंगतों का गुज़ारा या शहे बग़दाद

तेरे दर से है मंगतों का गुज़ारा या शहे बग़दाद
येह सुन कर मैं ने भी दामन पसारा या शहे बग़दाद

मेरी क़िस्मत का चमका दो सितारा या शहे बग़दाद
दिखा दो अपना चेहरा प्यारा प्यारा या शहे बग़दाद

इजाज़त दो कि मैं बग़दाद ह़ाज़िर हो के फिर कर लूं
तुम्हारे नीले गुम्बद का नज़ारा या शहे बग़दाद

ग़मे शाहे मदीना मुझ को तुम ऐसा अ़त़ा कर दो
जिगर टुकड़े हो दिल भी पारा पारा या शहे बग़दाद

मदीने का बना दो तुम मुझे कुछ ऐसा दीवाना
फिरूं दीवानगी में मारा मारा या शहे बग़दाद

ख़ुदा के ख़ौफ़ से रोए नबी के इ़श्क़ में रोए
अ़त़ा कर दो वोह चश्मे तर ख़ुदारा या शहे बग़दाद

गुनाहों के मरज़ ने कर दिया है नीम जां मुझ को
तुम्हीं आ के करो अब कोई चारा या शहे बग़दाद

मुझे अच्छा बना दो मीठे मुर्शिद कि यक़ीनन हैं
मेरे ह़ालात तुम पर आश्कारा या शहे बग़दाद
सुधारो मेरे मुर्शिद मुझ गुनहगारो कमीने को
न जाने तुम ने कितनों को सुधारा या शहे बग़दाद
हुई जाती है ऊजड़ अब मेरी उम्मीद की खेती
भरन बरसा दो रह़मत की ख़ुदारा या शहे बग़दाद
करम मीरां ! मेरे उजड़े गुलिस्तां में बहार आए
ख़ज़ां का रुख़ फिरा दो अब ख़ुदारा या शहे बग़दाद
शहा ! ख़ैरात लेने को सलात़ीने ज़माना ने
तेरे दरबार में दामन पसारा या शहे बग़दाद
गरजते बादलों का शोर चलती आंधियों का ज़ोर
लरज़ता है कलेजा दो सहारा या शहे बग़दाद
बचा लो दुश्मनों के वार से या ग़ौस जीलानी
बड़ी उम्मीद से तुम को पुकारा या शहे बग़दाद
ख़ुदा से बख़्शवा दो बे ह़िसाब बहरे अ़ली ह़ैदर
करम कर दो करम कर दो ख़ुदारा या शहे बग़दाद
अगर्चे लाख पापी है मगर अ़त्त़ार किस का है
तुम्हारा है तुम्हारा है तुम्हारा या शहे बग़दाद